17 अप्रैल 2011, कुल पृष्ठ : 12, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 2 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अप्रैल (द्वितीय), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

डॉ. भारिल्ल द्वारा रचित -

समयसार अनुशीलन एम.ए. के कोर्स में

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के एम.ए. के पाठ्यक्रम में समयसार, प्रवचनसार, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय आदि ग्रन्थ हैं। समयसार के संदर्भ ग्रन्थ के रूप में डॉ. भारिल्ल कृत **'समयसार अनुशीलन'** को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया है। इसके लिये दर्शन विभाग के अध्यापक डॉ. धर्मचंदजी जैन द्वारा सराहनीय प्रयास किया गया।

ज्ञातव्य है कि सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर में भी डॉ. भारिल्ल कृत **'परमभावप्रकाशक नयचक्र'** व **'ध्यान का स्वरूप'** एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल की **'इन भावों का फल क्या होगा'** व **'सामान्य श्रावकाचार'** पुस्तकें पाठ्यक्रम में स्वीकृत हैं।

ताइवान में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व

ताइपे-ताइवान : यहाँ दिनाँक 21 व 22 फरवरी को आयोजित International conference "Dialogue A common Human Bond" में डॉ. अनेकान्त जैन (सहायक आचार्य - जैनदर्शन विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ) ने भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व से जैनधर्म का प्रतिनिधित्व करके जैनधर्म तथा दर्शन को ग्लोबल स्तर पर प्रस्तुत किया।

सम्मेलन में डॉ. अनेकान्त जैन को " Civilization from Discord to Reconciliation (With Special reference to Jain theory of Anekantavada)" विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत करने हेतु विशेषरूप से आमंत्रित किया गया था। सम्मेलन में विभिन्न देशों से विभिन्न धर्मो के लगभग चालीस विद्वान तथा धर्मगुरु एवं हिन्दू, ईसाई, बौद्ध, मुस्लिम, यहूदी तथा अन्य अनेक धर्मों के अनेक विद्वान, राजदूत व मंत्री उपस्थित थे।

ज्ञातव्य है कि टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के विद्यार्थी रहे डॉ. अनेकान्त जैन विगत डेढ़ दशक से कई राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में जैन सिद्धांतों पर आधारित शोधपत्र प्रस्तुत कर चुके हैं तथा दशलक्षणपर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ बाहर जाकर समाज में निरन्तर सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

- अनुराग वैसाखिया

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

१. मुम्बई : यहाँ मलाड (पू.) में दिनाँक ८ से १० मार्च तक ग्रन्थाधिराज समयसार पर तीन प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त मुमुक्षु उत्कर्ष मण्डल के २५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में हुये कार्यक्रम में विशिष्ट उद्‌बोधन भी हुआ।

२. कारंजा (महा.) : यहाँ स्थित दि. जैन मंदिर में दिनाँक ११ व १२ मार्च को प्रात: समयसार कलश-११० पर दो प्रवचन हुये।

दिनाँक ११ मार्च को कंकुबाई श्राविकाश्रम में बालिकाओं में धर्म की रुचि जागृत करने हेतु उद्‌बोधन हुआ।

दिनाँक १२ मार्च को महावीर ब्रह्मचर्याश्रम के विद्यार्थियों को टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय का परिचय दिया एवं उसमें प्रवेश लेने हेतु प्रेरित किया। यहाँ अनेक विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान भी किया गया।

३. औरंगाबाद (महा.) : यहाँ दिनाँक १३ से २१ मार्च तक स्वानुभव मण्डल में गुणस्थान विवेचन के आधार से श्रेणीगत गुणस्थानों (८वाँ, ९वाँ, १०वाँ एवं ११वाँ) पर कक्षाएं ली गई।

४. सेलू (महा.) : यहाँ दिनाँक २८ से ३० मार्च तक गुणस्थान विवेचन पर प्रात:, दोपहर व सायं तीनों समय कक्षाओं का लाभ मिला, जिसमें शताधिक साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया। सभी लोगों ने कक्षाओं से प्रभावित होकर भविष्य में भी पुन: बुलाने की भावना व्यक्त की।

५. भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक १ से ३ अप्रैल तक प्रात: प्रवचनसार ग्रन्थ के आधार पर तीन प्रवचन हुये। दोपहर को श्री डालचंदजी स्वाध्याय भवन में चारित्र पाहुड पर तीन प्रवचन हुये।

आदिनाथ जयंती पर विचार गोष्ठी

जयपुर (राज.) : यहाँ भट्टारकजी की नसियां में दिनाँक 27 मार्च को प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ एवं उनके पुत्र भरत चक्रवर्ती का जन्म जयंती समारोह राजस्थान जैन सभा द्वारा हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस अवसर पर 'भगवान आदिनाथ एवं उनके पुत्र भरत चक्रवर्ती का समग्र विकास में योगदान' विषय पर एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री डी.सी.जैन (पुलिस महानिरीक्षक) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. पी.सी.जैन (पशुपालक विभाग) एवं विशिष्ट अतिथि श्री अब्दुल कुरैशी (अध्यक्ष-म.प्र. अल्पसंख्यक आयोग) उपस्थित थे।

गोष्ठी में प्रमुख वक्ता के रूप में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्री राजेन्द्रजी रत्नेश एवं डॉ. सुषमा सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किये।

सभी का स्वागत श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी (अध्यक्ष-राजस्थान जैन सभा) ने एवं आभार प्रदर्शन मंत्री श्री सुभाषचंदजी जैन ने किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री प्रकाशजी जैन अजमेरा ने किया।

सम्पादकीय - 54

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ८५

विगत गाथा में धर्मास्तिकाय का ही व्याख्यान किया गया है।

अब प्रस्तुत गाथा में भी धर्मद्रव्य का ही स्वरूप उदाहरण सहित समझाया है। मूल गाथा इसप्रकार है –

उदयं जह मच्छाणं गमणाणुग्गहकरं हवदि लोए।
तह जीवपोग्गलाणं धम्मं दव्वं वियाणाहि।।८५।।

(हरिगीत)

गमन हेतुभूत है जगत में, ज्यों जल होता मीन को।
त्यों धर्म द्रव्य है गमन हेतु जीव पुद्गल द्रव्य को ।।८५।।

जिसप्रकार लोक में पानी मछलियों को गमन में अनुग्रह करता है, अर्थात् निमित्त होता है, उसीप्रकार धर्मद्रव्य जीव एवं पुद्गलों को गमन में निमित्त होता है – ऐसा जानो।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि यह धर्मद्रव्य के गति हेतुत्व का दृष्टान्त है। जिसप्रकार पानी स्वयं गमन न करता हुआ और पर को अर्थात् मछलियों को गमन न कराता हुआ स्वयमेव गमन करती हुई मछलियों को उदासीन अविनाभावी सहायरूप (कारण मात्र रूप) गमन में निमित्त होता है, उसी प्रकार धर्मास्तिकाय भी स्वयं गमन न करता हुआ और परद्रव्य को गमन न कराता हुआ स्वयमेव गमन करते हुए जीवों एवं पुद्गलों को उदासीन अविनाभावी सहायरूप कारणमात्र रूप से गमन में अनुग्रह करता है अर्थात् गमन में मात्र निमित्त बनता है ?

इसी बात को कवि हीरानन्दजी इसप्रकार कहते हैं।

(सवैया इकतीसा)

जैसे जल चलै नाहि मीन कौं चलावे नाहिं,
स्वयंमेव चलै मीन ताकौं सहकारी है।
तैंसै एक धर्मद्रव्य चलै न चलावै काहु,
पुग्गल जीव चलै तिनही का सहायी है।
मीन गति क्रियाचारी पानी का निमित्त पाय,
अविनाभाव दौनौं के उदासीन भारी है।
ऐसैं धर्मदर्व उदासीन रूप लोक मध्य,
जथारूप जैनी जानै वस्तुता सिरारी है ।।३७६।।

(दोहा)

जस नर-पसु कौं मही, चलनैं कौ आधार।
तैसैं पुग्गल जीव कौं, धरम द्रव्य सहकार ।।३७७।।

जिसतरह जल स्वयं गमन करती हुई मछली को चलाने में निमित्त होता है, उसीप्रकार धर्म स्वयं नहीं चलता है एवं जीव व पुद्गल को नहीं चलाता; किन्तु जब जीव व पुद्गल स्वयं गमन करते हैं तब धर्मद्रव्य गमन में निमित्त बनता है।

उक्त गाथा पर व्याख्यान करते हुए श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ''यहाँ धर्मद्रव्य का ज्ञान कराते हैं। जिसप्रकार मछलियों को गमन करने में पानी निमित्तमात्र है। पानी मछली को जबरदस्ती या प्रेरणा देकर नहीं चलाता है; बल्कि जब मछली अपनी तत्समय की योग्यता से स्वयं चलती है, तब पानी उदासीन निमित्त अविनाभावी रूप से बनता है। ऐसा ही निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है। उसी प्रकार जीव तथा पुद्गलों को चलने में धर्मद्रव्य निमित्त होता है। मूल पाठ में जो 'अनुग्रह' शब्द है, उसका अर्थ निमित्त रूप से सहकारी कारण है।

कहने का तात्पर्य यह है कि मछली के गमन के साथ-साथ जिसप्रकार पानी नहीं चलता, उसी प्रकार जीव व पुद्गलों के साथ धर्मद्रव्य चलता नहीं है। मात्र गमन में निमित्त होता है। ऐसा ही पानी का स्वभाव है। जब मछली अपनी तत्समय की योग्यता से चलती है, उसीसमय पानी पर चलाने का आरोप आता है, क्योंकि मछली की स्वयं की योग्यता ही ऐसी है कि वह पानी में ही चल सकती है। इसीप्रकार जीवों व पुद्गलों का ऐसा ही स्वभाव या योग्यता कि वह धर्मद्रव्य के निमित्त हुए बिना गमन नहीं कर सकता। धर्मद्रव्य तो उदासीन निमित्त है, अतः प्रेरणा करके नहीं चलाता।

यहाँ दृष्टान्त में कहा है कि सिद्धदशा प्राप्त करने में भव्य जीव की लायकात अर्थात् शुद्धात्मा की अनुभूति उपादान कारण है। यहाँ वर्तमान पर्याय क्षणिक उपादान कारण है। गुण तो त्रिकाल हैं। उस समय मनुष्य देह, उत्तम संहनन, तीर्थंकर प्रकृति निमित्त कारण कहे जाते हैं।

दूसरा लोकोत्तर दृष्टान्त देते हुये कहते हैं कि भव्य तथा अभव्य चारगति में परिभ्रमण करते हैं, उनके अपने-अपने शुभाशुभभाव उपादानकारण हैं तथा निमित्त कारण का बाह्यलिंग, दान-पूजा के समय होनेवाली शारीरिक क्रिया तथा बाहरी शुभ अनुष्ठान, मन्दिर, समवशरण, मानस्तंभ बहिरंग सहकारी निमित्त कारण कहलाते हैं।

पण्डित बनारसीदासजी ने कहा है कि कोई द्रव्य किसी अन्य द्रव्य का प्रेरक नहीं है। इसप्रकार जीव व पुद्गल के क्षेत्रान्तर होने में धर्मास्तिकाय का निमित्तपना दृष्टान्तों द्वारा समझाया है।''

सम्पूर्ण कथन का सारांश यह है कि धर्म द्रव्य स्वयं गमन करते हुए जीव व पुद्गलों के गमन में उदासीन रूप से निमित्त बनता है। उनके साथ स्वयं गमन नहीं करता। ●

कुछ प्रश्न

– अशोक बड़जात्या, इन्दौर

किसी भी महापुरुष के अवसान के पश्चात् उनके भक्त अपने आपको असहाय महसूस करते हैं, उनमें यह भी भय व्याप्त हो जाता है कि उनके चलाये हुये मिशन को उनके जैसी शक्ति एवं प्रखरता से कौन चलायेगा ? साथ ही वर्चस्व स्थापना की शुरुआत भी प्राय: हो जाती है। पूज्य गुरुदेव के अवसान के पश्चात् भी हम सब भी विचलित थे एवं हम कई प्रकार की आशंकाओं से ग्रस्त भी थे।

हमारा यह सौभाग्य है कि बगैर कुछ हानि के तत्त्वप्रचार का कार्य आज गुरुदेव के अवसान के 30 वर्ष पश्चात् भी जोरशोर से चल रहा है। तत्त्व एवं अध्यात्मप्रेमियों की संख्या मे वृद्धि ही हुई है। स्वामीजी के सामने जितने तत्त्वप्रचारक विद्वत्जन थे एवं जितना साहित्य छपता था; उसमें भी गुणातीत वृद्धि ही हुई है।

नये-नये अध्यात्म तीर्थों का अभ्युदय भी हुआ एवं सर्वज्ञवाणी (प्रकारान्तर से कुन्दकुन्द वाणी एवं कानजी वाणी) को स्वामीजी की हयाति (उपस्थिति) के समय से अधिक पढ़ा, सुना एवं गुना जाने लगा है।

मुमुक्षुओं में आपसी सौहार्द्र का भी अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। जगह-जगह मुमुक्षु मन्दिरों, मण्डलों एवं तीर्थों का निर्माण हुआ, मंदिरों -मंदिरों में अध्यात्म गोष्ठियाँ, प्रवचन सभाएं, मण्डल विधान एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं के अभूतपूर्व आयोजन होने लगे। कभी-कभी तो ऐसा महसूस भी होता है, मानो चतुर्थकाल फिर से आ गया हो एवं जैन अध्यात्म की दुंदुभियां बज रही हों।

पिछले एक-दो वर्षों में ऐसा प्रतीत होता है, वातावरण उतना सहज एवं सौम्य नहीं रहा, साधर्मी वात्सल्य हिचकोले खाने लगा एवं हम सब कुछ असहज महसूस करने लगे हैं।

स्वामीजी के नाम पर वर्चस्व की लड़ाई सी छिड़ने लगी, कुछ संस्थाएं एवं व्यक्ति स्वयं को स्वामीजी के नाम एवं तत्त्व के एकमात्र प्रतिनिधि एवं प्रहरी के रूप में निरूपित करने लगे। एक संस्था जो आजतक सभी मुमुक्षुओं की प्रतिनिधि संस्था के रूप में स्वीकार्य थी, उस पर आरोपों की बौछार सी होने लगी। पहले उस संस्था पर यह आरोप लगाये गये कि वहाँ स्वामीजी को गौण किया जा रहा है, उन्हें पार्श्व में छकेला जा रहा है। पिछले एक-दो सप्ताह में अचानक ही उन पर स्वामीजी के नाम का दुरुपयोग करने के आरोप लगने लगे। आरोप लगाने वालों को ही नहीं मालूम कि आरोपी संस्था एवं व्यक्ति स्वामीजी का नाम नहीं ले रहे हैं या अधिक ले रहे हैं।

संपूर्ण विश्व जिस व्यक्ति को मुमुक्षुओं के सर्वोच्च प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करता है, उनके हर क्रियाकलाप की आलोचना सार्वजनिक रूप से होने लगी।

इसतरह के प्रखर विरोध से मुमुक्षओं की स्थिति अन्य समाजजनों के समक्ष हास्यास्पद बनती जा रही है, जिस संस्था ने आज तक पूर्ण कालिक एवं समर्पित विद्वानों का निर्माण किया एवं जो आज तक इसप्रकार की एकमात्र संस्था है, अगर वह प्रतिष्ठाचार्यों के निर्माण कार्य को भी हाथ में ले तो इसमें क्या आपत्ति हो सकती है ? पहले से कहीं अधिक आज मंडल विधानों एवं पंचकल्याणकों के कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं, तब अगर इस कार्य के सहयोगियों का निर्माण प्रारंभ हो, उन्हें ट्रेनिंग दी जाये तो गलत क्या हो रहा है ?

दूसरा प्रश्न

लेखक की यह मान्यता रही है कि गुरुदेव द्वारा प्रचारित अध्यात्म एवं कुन्दकुन्दाचार्य के परमागम सम्पूर्ण विश्व के धार्मिक जनों की थाती है। कम से कम समस्त जैनों की थाती तो यह है ही। मुमुक्षुओं से इतर जो जैन समाज है उनमें जमकर मिथ्याप्रचार हुआ एवं कुछ लोग यह स्थापित करने में सफल रहे कि हम मुनि विरोधी हैं एवं अपना एक पंथ अलग से चलाना चाहते हैं, जिसका नाम उन्होंने 'कानजी पंथ' रख दिया।

हम सब हृदय से निर्ग्रंथ साधुओं के परम भक्त हैं, उनके गुणानुवाद करने में एवं उन्हें मानने में किसी से भी पीछे नहीं हैं। अगर देखा जये तो खरेखर (वस्तुत:) दिगम्बर जैन तो मुमुक्षु लोग ही हैं।

स्वामीजी भी प्राय: हर प्रवचन में निर्ग्रंथ साधुओं के गीत गाया करते थे, अन्यथा उन्हें धर्म परिवर्तन की जरूरत ही क्यों पड़ती ? अत्यंत प्रमोद से वे हमेशा बोल पड़ते थे 'ऐसी प्रखर बात तो निर्ग्रंथ साधुओं सिवाय अन्य कोई तो कह ही नहीं सकते'।

गुरुदेव का यह मुनि प्रेम मुमुक्षु बंधुओं के सिवाय अन्य धार्मिक जीवों तक पहुंचाने का कार्य, उन जीवों के पास जाकर ही किया जा सकता है। उनमें स्थापित किये गये भ्रमों को उनके पास जाकर ही तोड़ा जा सकता है। उनके साथ संपर्क बढ़ाये बगैर यह सब कैसे संभव है ?

अगर हम अपने विरोधियों तक नहीं पहुंचे तो क्या तत्त्वप्रचार को सीमित करने का पाप हमारे सिर नहीं होगा। जो सक्षम है, जिनकी वाणी में ताकत है और जो विरोधियों के समीप जाकर तत्त्वप्रचार कर सकते हैं क्या हम उन्हें कुछ सीमाओं में बांधकर रख देवें ?

नदी को तालाब नहीं बनाया जाना चाहिये, वह एक गांव की होकर नहीं रह सकती; उसे तो कई गांवों की प्यास बुझाना है। सर्वज्ञ वाणी के व्यापक प्रचार के लिये अगर योजनाबद्ध तरीके से कोई कार्य करे तो हमारी शुद्धता कैसे अशुद्धता में परिवर्तित हो जायेगी, सत्य तत्त्व असत्य कैसे हो जायेगा, गुरुदेव गौण कैसे हो जाएंगे ?

स्वयं पर, सच्चे तत्त्व पर विश्वास रखते हुये आगे बढ़ना ही हमारी नियति है। इसमें बाधा उत्पन्न करने से हमें कोईलाभ प्राप्त नहीं होगा। मैं आशा करता हूँ कि मुमुक्षु समाज इस बात पर गंभीरता से विचार करेगा।●

प्रशिक्षण शि

ाविर पत्रिका

अब हम क्या करें ?

– डॉ. हुकमचंद भारिल्ल, जयपुर

(**नोट :** अमेरिका के मुमुक्षु भाइयों द्वारा गठित नवीन संस्था मोना (मुमुक्षु मण्डल ऑफ नोर्थ अमेरिका) द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री के 122वें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में डॉ. भारिल्ल द्वारा दिनाँक 7 मई 2011 को दिया जाने वाला व्याख्यान जैनपथप्रदर्शक के पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है **– सह संपादक**)

आज आध्यात्मिकसत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी का 122वाँ जन्म दिवस है। अमेरिका में गठित नवीन संस्था मोना अर्थात् मुमुक्षु मण्डल ऑफ नार्थ अमेरिका ने हम सबको एक ऐसा अवसर प्रदान किया है कि आज सम्पूर्ण विश्व मिलकर उनका जन्मदिवस मना रहा है, उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित कर रहा है, उनके और उनके द्वारा किये गये वीतरागी-तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के संबंध में अपने विचार प्रगट कर रहा है, विचार-विमर्श कर रहा है। इसके लिए मोना को जितना धन्यवाद दिया जाये, कम है।

पूज्य गुरुदेवश्री के देहावसान के उपरान्त विगत तीस वर्षों में क्या हुआ, कैसे हुआ – इसका लेखा-जोखा चिरंजीव अभय ने प्रस्तुत किया ही है और आगामी तीस वर्षों में हमें क्या करना चाहिए – मुझे इस विषय पर अपने विचार व्यक्त करना है।

उक्त संदर्भ में पूज्य गुरुदेवश्री के स्वर्गवास के अवसर पर आज से तीस वर्ष पहले आत्मधर्म (हिन्दी) के फरवरी 1981 के संपादकीय में **'अब क्या होगा ?'** शीर्षक से मैंने जो विचार प्रस्तुत किये थे, उनका महत्त्वपूर्ण अंश प्रस्तुत करना चाहता हूँ; जो इसप्रकार है-

''पिता के देहावसान होने पर उनके लगाए कारखाने बन्द नहीं होते, अपितु एक के अनेक होकर और अधिक द्रुतगति से चलते हैं। जब दो-चार पुत्रों के होने मात्र से ये कल-कारखाने द्विगुणित-चतुर्गुणित होकर चलते हैं, तो जिस धर्मपिता ने चार लाख से भी अधिक धर्म संताने छोड़ी हों, उसके चलाए कार्यक्रम कैसे बन्द हो सकते हैं ?

वे तो शतगुणित, सहस्रगुणित होकर चलने चाहिए और चलेंगे भी। इसमें आशंकाओं के लिए कोई अवकाश नहीं है।

सोनगढ़ में ही नहीं, अपितु सारे देश में अब भी वैसे ही शिविर लगेंगे जैसे कि गुरुदेवश्री की उपस्थिति में लगते थे। वैसा ही साहित्य प्रकाशित होगा और कम से कम मूल्य में उपलब्ध कराया जायेगा, जैसा कि गुरुदेवश्री के सद्भाव में होता था। और भी सभी कार्यक्रम अब भी उसीप्रकार संचालित होंगे, जिसप्रकार कि तब चलते थे।

याद रखो, यदि ऐसा नहीं हुआ तो हम सब उन्हीं कुपुत्रों में गिने जावेंगे जो कि पिता के द्वारा छोड़ी संपत्ति को बढ़ाते नहीं, अपितु बर्बाद कर देते हैं। अब हमें गुरुदेवश्री की ओर नहीं, अपनी ओर देखना है और यह सिद्ध करना है कि हम अपने धर्मपिता के कपूत नहीं, अपितु सपूत हैं। क्या कमी है आज हमारे पास ? धनबल, जनबल, बुद्धिबल – सभी कुछ तो है। कुछ भी तो नहीं ले गये वे, सबकुछ यहीं तो छोड़ गए हैं, हमारे लिए। जब उन्होंने दिगम्बर धर्म स्वीकार किया था, तो आत्मबल के अतिरिक्त क्या था उनके पास ?

पर अकेले उन्होंने एक टेकरी को तीर्थ बना दिया, देशभर में धर्म का डंका बजा दिया। क्या हम सब मिलकर भी उनकी थाती को न संभाल सकेंगे ? हम सबके समक्ष यह एक चुनौती है। इस चुनौती को आज हमें स्वीकार करना है।

'अब क्या होगा ?' पूछने वालों को हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि वही होगा जो गुरुदेवश्री ने बताया है, चलाया है, जो अभी तक चलता है, अभी तक चलता रहा है; वह अब भी चलता रहेगा, उसीप्रकार चलता रहेगा, उसमें कोई कमी नहीं आयेगी, हो सकता है कि उसकी चाल में और भी तेजी आ जावे। पर, भाई....गुरुदेव तो गये सो गये, उन्हें तो कहाँ से लायें ?

आज गुरुदेव के हजारों घण्टों के टेप हमारे पास हैं, जिन्हें हम कभी भी उन्हीं की आवाज में सुन सकते हैं; घण्टों के उनके वी.डी.ओ.टेप (बोलती फिल्म) हैं, जिनके माध्यम से हम गुरुदेवश्री को चलते-फिरते देख सकते हैं, बोलते हुए देख सकते हैं, सुन सकते हैं; बस, वे सदेह-सचेतन हमारे पास नहीं हैं।

'अब क्या होगा ?' इस किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति को तोड़ो न ! छोड़ो न इस व्यर्थ के विकल्प को और चल पड़ो उस रास्ते पर जो गुरुदेवश्री ने बताया है और जगत को बताओ वह रास्ता जो गुरुदेवश्री ने आपको – हम सबको बताया है।

भगवान महावीर के चले जाने पर गौतम गणधर रोने नहीं बैठे थे, अपितु महावीर की बताई राह पर चलकर स्वयं महावीर (सर्वज्ञ) बन गये थे। यदि हम गुरुदेवश्री के सच्चे शिष्य हैं तो हमें गुरुदेवश्री के चले जाने पर वही राह अपनानी चाहिए, जो महावीर के अन्यतम शिष्य गौतम ने अपनाई थी।

गुरुदेवश्री के अभाव में उदासी तो सहज है, पर निराशा का कोई स्थान नहीं होना चाहिए। उठो ! मन को यों निराश न करो और चल पड़ो उस राह पर...।''

गुरुदेवश्री के देहावसान के अवसर पर हमने जो संकल्प किये थे; उन्हें क्रियान्वित करने में हम कितने सफल हुए हैं; इसका संक्षिप्त विवरण अभी अभयकुमार ने बताया ही है और वह अब सबके सामने प्रत्यक्ष भी है ही।

अब हमें आगे के तीस वर्षों तक क्या करना है ? – इस पर विचार अपेक्षित है।

गुरुदेवश्री के स्वर्गवास के समय कुछ गिनती के वयोवृद्ध स्वाध्यायी विद्वान तो थे; पर जिन्होंने जैनदर्शन का विधिवत सर्वांगीण अध्ययन किया हो, ऐसे युवा विद्वान नहीं थे; पर आज हमारे पास जैनशास्त्रों का विधिवत अध्ययन करनेवाले, प्राकृत-संस्कृत भाषा के जानकार छह सौ से भी अधिक युवा विद्वान हैं; जिनके द्वारा हम गुरुदेवश्री के बताये तत्त्वज्ञान को न केवल घर-घर तक,अपितु जन-जन तक पहुँचाने का काम कर सकते हैं, शास्त्रों के सुन्दरतम अनुवाद प्रस्तुत कर सकते हैं, जिनवाणी को जनवाणी बना सकते हैं। हमें यह कार्य पूरी शक्ति से करना चाहिए।

ये विद्वान आज हमारी निधि हैं। इनका निर्माण ऐसे ही नहीं हो गया है। यह निधि 35 वर्षों से पूर्णत: समर्पित अथक् परिश्रम का परिणाम है। विद्वान बनाने का यह कारखाना पूज्य गुरुदेवश्री के समक्ष ही खुल गया था। इसे पूज्य गुरुदेवश्री का मंगल आशीर्वाद प्राप्त था। एक-दो बेच उनके सामने ही तैयार हो गये थे; जिन्हें देख-देख कर उनके मुख से असीम वात्सल्य भाव प्रगट होता था। इन्हें देखकर उन्हें भरोसा हो गया था कि यह तत्त्वज्ञान चिरकाल तक जन-जन तक निरन्तर पहुँचता रहेगा।

यदि हम इन विद्वानों का सही उपयोग नहीं करेंगे, उनका समुचित सम्मान नहीं करेंगे तो यह लोग अन्य लौकिक क्षेत्र में जा सकते हैं। इनको गढने में जो श्रम हुआ, वह व्यर्थ जा सकता है। इनका उपयोग पठन-पाठन

और दैनिक प्रवचनों के अतिरिक्त शिविरों के संचालन में भी किया जा सकता है और किया भी जा रहा है। आज देश में दो-दो सौ स्थानों पर एक साथ लगाये जानेवाले शिविर इन विद्वानों के सहयोग से चल रहे हैं।

ध्यान रहे, यदि इनका समुचित समादर हुआ तो आगे भी लोग अपने बालकों को जैनदर्शन का अध्ययन कराने के लिए उत्सुक रहेंगे; अन्यथा हमें छात्रों की उपलब्धता भी सहज न रहेगी। यदि आर्थिक कठिनाई के कारण विद्वान तैयार करने का काम प्रभावित होता है, उसका विस्तार रुक जाता है तो निरन्तर आगे बढ़नेवाले मुमुक्षु समाज के कदम रुक जायेंगे। इस काम को कायम रखना हमारा परम कर्त्तव्य है।

गुरुदेवश्री की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का काम करनेवाले ये समर्पित विद्वान ही गुरुदेवश्री के सच्चे स्मारक हैं; उनकी स्मृति दिलानेवाले हैं। इनका निर्माण जड़-पत्थर से बने स्मारकों के समान सहज सुलभ नहीं है; क्योंकि इन्हें बनाने के लिए ईंट-पत्थर और रोड़ी-सीमेन्ट काम नहीं आते, इनके निर्माण की कच्ची सामग्री तो वे आध्यात्मिक रुचि से सम्पन्न प्रतिभाशाली बालक हैं; जो अपना जीवन इस महान कार्य को समर्पित करना चाहते हैं। इन्हें गढनेवाले व्युत्पन्न विद्वान भी मजदूरों के समान सहज उपलब्ध नहीं हैं।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट सहित जो भी संस्थाएँ इस काम में लग रही हैं; उन सभी का महान योग गुरुदेवश्री के प्रभावना योग में है। इनका संचालन सफलतापूर्वक होते रहना भी अत्यन्त आवश्यक है।

तैयार होनेवाले ये वैरागी विद्वान पत्थर के स्मारकों के समान हजारों वर्ष तक रहनेवाले नहीं हैं। जबतक ये तैयार होकर अनुभवी होते हैं तो जाने की तैयारी हो जाती है। अत: विद्वान बनाने की यह प्रक्रिया एक सतत् प्रक्रिया पीढी दर पीढी चलती रहनी चाहिए। ऐसा नहीं है कि गुरुदेव का एक स्मारक बना दिया और बस। विद्वानों की तो परम्परा चाहिए, एक-दो से काम चलनेवाला नहीं है।

टेपों में सुरक्षित गुरुदेवश्री की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का जो काम अनन्तभाई और निमिषभाई ने किया है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जावे कम है; पर अब उन्हें सुनने-सुनाने का सम्पूर्ण काम मुमुक्षु समाज का है। मुमुक्षु समाज को इस दिशा में विशेष सक्रिय होना चाहिए; किन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि गुरुदेवश्री की वाणी के मर्म को समझने-समझाने का काम तो विद्वान लोग ही कर सकते हैं। अत: उन्हें अपनी शक्ति का भरपूर उपयोग करके इस काम को करना चाहिए।

गुरुदेवश्री के स्वर्गवास के बाद मनाये जानेवाले जन्मदिवस पर आत्मधर्म (हिन्दी) के मई 1981 के अंक के **'एक युग जो बीत गया'** शीर्षक से लिखे गये सम्पादकीय में मैंने जो कुछ लिखा था, उसका महत्त्वपूर्ण अंश इसप्रकार है –

''यदि हम यहाँ-वहाँ के विकल्पों में ही उलझे रहे तो फिर उन रहस्यों का क्या होगा, जो गुरुदेवश्री ने अपनी दिव्यवाणी द्वारा उद्घाटित किये थे और जो आज भी हमारे पास टेपों में सुरक्षित हैं। क्या वे उन्हीं में कैद रह जावेंगे ? हमें उन्हें कागज पर लाना है, जन-जन तक पहुँचाना है। बहुत काम है हमारे सामने जो बहुत आसानी से किए जा सकते हैं और किए जाने चाहिए।

आज हम युग के मोड़ पर खड़े हैं और हमें ऐतिहासिक उत्तरदायित्व वहन करना है। इस दृष्टि से यह महोत्सव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है; क्योंकि इस अवसर पर हमें अपने कर्त्तव्य का चुनाव करना है।

मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि जब एक बार गुरुदेवश्री के सामने यह प्रश्न आया कि जन्म-जयन्ती के इस आडम्बर से क्या लाभ है ? तब वे सहजभाव से बोले थे कि 'कुछ नहीं, बस बात यह है कि इस बहाने साहित्य की कीमत कम करने के लिए ज्ञानप्रचार में कुछ पैसा आ जाता है और जिनवाणी के अल्प मूल्य में घर-घर पहुँचने का सिलसिला आरंभ रहता है। इसे समाप्त करने से लाभ तो कुछ होगा ही नहीं, यह हानि हो सकती है। अत: चल रही है, सो चल रही है।

इस जन्म-जयन्ती के अवसर पर भी हम इस प्रवाह को चालू रख सके तो मैं समझूँगा कि हम उनके अभाव में उनकी जन्म-जयन्ती उसी रूप में मना सके हैं।

जहाँ तक मुझे स्मरण है, उनकी जन्म-जयन्ती में आया पैसा सदा ज्ञानप्रचार अर्थात् शास्त्रों की कीमत कम करने पर ही लगता रहा है। गुरुदेवश्री की भावना को ध्यान में रखकर आगे भी हमें उक्त परम्परा को कायम रखना चाहिए। ज्ञानप्रचार की उत्कट भावना उनके हृदय में निरंतर प्रवाहमान रहा करती थी। इस बात का अनुभव उनके नजदीक रहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति को भली-भाँति है। उनकी इस पावन मनोभावना का समादर करते हुए हम सब मिलकर संकल्प करें कि हे गुरुदेव ! आपने जो कुछ हमें दिया है, हम उसे जन-जन तक अवश्य पहुँचायेंगे।

गुरुदेवश्री के वियोग में अब उनकी वाणी की ही शरण है; क्योंकि वह आचार्य कुन्दकुन्द आदि आचार्यों के वचनानुसारिणी है। अत: अब हमें उसके अध्ययन, मनन, चिन्तन एवं प्रचार-प्रसार में तन-मन-धन से जुट जाना चाहिए।

गुरुदेवश्री की स्मृति बनाये रखने के लिए उनके पाषाणी स्मारक से इन गतिविधियों के सफल संचालन की अधिक आवश्यकता है, अधिक महत्त्व है; क्योंकि इनसे ही उनके बताये मार्ग का स्थायित्व रहेगा।

यदि हम गुरुदेवश्री के सच्चे अनुयायी हैं, तो हमें सर्वप्रथम इसकी व्यवस्था करना चाहिए कि गुरुदेवश्री की साधनाभूमि सोनगढ़ में जो कार्यक्रम उनके सदभाव में चलते थे, वे उसीप्रकार निरन्तर चलते रहें।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि जो उत्तरदायित्व पूज्य गुरुदेवश्री के अभाव में हमारे कंधों पर आया है, उसे हम सब मिलकर आसानी से वहन कर सकते हैं; क्योंकि गुरुदेवश्री ने हमें विधिवत गढ़ा है, सर्वप्रकार सुयोग्य बनाया है, सबकुछ दिया है, किसी भी प्रकार कमजोर नहीं रहने दिया है। बस, आवश्यकता मात्र दृढ़ संकल्प के साथ चल पड़ने की है।''

आज हम अनेक गुटों में विभक्त होते जा रहे हैं। यह स्थिति अच्छी नहीं है। मतभेद होना कोई बुरी बात नहीं है; क्योंकि सजग चिंतकों में, पढे-लिखे लोगों में यह सहज ही होता है; परन्तु जरा-जरा सी बातों पर लड़ना-झगड़ना कदापि उचित नहीं है।

गुरुदेवश्री ने हमें आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार का नारा दिया था। अत: सर्वप्रथम तो हमें सम्पूर्ण शक्ति से आत्मानुभव करने का प्रयास करना चाहिए और दूसरे क्रम में तत्त्वप्रचार की गतिविधियों का संचालन करना चाहिए।

तत्त्वप्रचार की गतिविधियों के निर्विघ्न सफल संचालकों के लिए जितने स्थान की आवश्यकता हो; उतने धर्मायतनों के निर्माण को तो अनुचित नहीं कहा जा सकता; किन्तु अनावश्यक निर्माण कार्यों में शक्ति का उपयोग अनर्थकारी ही है, धनबल-जनबल की बर्बादी ही है।

अन्त में सभी आत्मार्थी मुमुक्षु भाइयों-बहिनों से एकमात्र यही अनुरोध है कि वे अपने समय, शक्ति का उपयोग आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार के कार्यों में लगायें।

सभी को सादर जयजिनेन्द्र। ●

प्रशिक्षण शि

वेर पत्रिका

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

72 उन्नीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

प्रश्न ह्न आचार्य गुणभद्र ने अपने आचार्य जिनसेन के अधूरे महापुराण को पूरा किया है न ?

उत्तर ह्न क्या किया, कैसा किया; देखा है आपने ? जिनसेन कृत आदिनाथ चारित्र जैसा और जितना है, आचार्य गुणभद्रकृत शेष तीर्थंकरों के चरित्र सबकुछ मिलाकर उसका शतांश भी नहीं है। जो भी हो, पण्डित टोडरमलजी जैसे प्रतिभाशालियों के अधूरे काम को पूरा करना मेरे वश का काम नहीं है। अरे,भाई ! जो मैं स्वयं लिखना चाहता हूँ, वह भी कितना क्या लिखा जा सकेगा, कहा नहीं जा सकता।

यह व्यवहाराभासी मिथ्यादृष्टि जीव निर्जरातत्त्व के संदर्भ में क्या व कैसी भूलें करता है; इसका निरूपण करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''तथा यह अनशनादि तप से निर्जरा मानता है; परन्तु केवल बाह्य तप ही करने से तो निर्जरा होती नहीं है। बाह्य तप तो शुद्धोपयोग बढ़ाने के अर्थ करते हैं। शुद्धोपयोग निर्जरा का कारण है, इसलिए उपचार से तप को भी निर्जरा का कारण कहते हैं। यदि बाह्य दु:ख सहना ही निर्जरा का कारण हो तो तिर्यंचादि भी भूख–तृषादि सहते हैं।[१]''

उक्त कथन में यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि व्यवहाराभासी शुद्धोपयोग के बिना ही उपवासादि बाह्य तपों से निर्जरा मानते हैं।

मोक्षमार्ग प्रकाशक में समागत उक्त प्रकरण मूलत: पठनीय है; क्योंकि इसमें पण्डित टोडरमलजी ने अनेक प्रकार की शंका–आशंकाओं का अनेक युक्तियों से समुचित समाधान किया है।

अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत करते हुए पण्डितजी कहते हैं –

''इसलिए बाह्य प्रवृत्ति के अनुसार निर्जरा नहीं है, अन्तरंग कषाय–शक्ति घटने से विशुद्धता होने पर निर्जरा होती है। सो इसके प्रगट स्वरूप का आगे निरूपण करेंगे, वहाँ से जानना।[२]''

उक्त कथन से यह अत्यन्त स्पष्ट है कि उपवासादि तपों और उससे होनेवाली निर्जरा के संबंध में पण्डित टोडरमलजी साहब आगे विस्तार से लिखनेवाले थे; जो ग्रंथ अधूरा रह जाने के कारण नहीं लिखा जा सका।

निर्जरा संबंधी इस प्रकरण का समापन करते हुए पण्डितजी लिखते हैं–

''बहुत क्या, इतना समझ लेना कि निश्चयधर्म तो वीतरागभाव है, अन्य नाना विशेष बाह्य साधन की अपेक्षा उपचार से किये हैं, उनको व्यवहारमात्र धर्मसंज्ञा जानना। इस रहस्य को नहीं जानता, इसलिए उसके निर्जरा का भी सच्चा श्रद्धान नहीं है।[३]''

स्वर्ग से मोक्ष में अनंतगुणा सुख है; इसलिए मोक्ष जाना योग्य है। ऐसा माननेवाला यह व्यवहाराभासी मोक्षसुख की जाति को नहीं पहिचानता; इसकारण उसकी तुलना स्वर्ग में प्राप्त होनेवाले पंचेन्द्रियजनित विषय सुख से करता है। **इन्द्रियसुख भले ही पुण्योदय से प्राप्त होता हो, पर इन्द्रिय सुख का उपभोग तो पापरूप ही है, पापबंध का कारण है, आकुलतामय है; इसलिए दु:ख ही है।**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २३० २. वही, पृष्ठ २३२
३. वही, पृष्ठ २३३

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''तथा इन्द्रादिक के जो सुख है, वह कषायभावों से आकुलतारूप है, सो वह परमार्थ से दु:ख ही है; इसलिए उसकी और इसकी एक जाति नहीं है। तथा स्वर्गसुख का कारण प्रशस्तराग है और मोक्षसुख का कारण वीतरागभाव है; इसलिए कारण में भी विशेष है; परन्तु ऐसा भाव इसे भासित नहीं होता।[१]''

इसप्रकार हम देखते हैं कि स्वर्गसुख आकुलतारूप है और आकुलता का कारण है; अत: दु:ख ही है। तथा **मोक्षसुख न तो आकुलतारूप है और न आकुलता का कारण है; इसलिए सुख ही है। इसप्रकार स्वर्गसुख और मोक्षसुख की जाति एक नहीं।** इसप्रकार के भाव का भासन व्यवहाराभासी को नहीं है। अत: उसका मोक्षतत्त्वसंबंधी श्रद्धान भी सही नहीं है।

इस प्रकरण के अन्त में तत्त्वार्थश्रद्धान की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''तथा व्यवहारदृष्टि से सम्यग्दर्शन के आठ अंग कहे हैं, उनको यह पालता है, पच्चीस दोष कहे हैं, उनको टालता है, संवेगादिक गुण कहे हैं, उनको धारण करता है; परन्तु जैसे बीज बोए बिना खेत के सब साधन करने पर भी अन्न नहीं होता; उसीप्रकार सच्चा तत्त्वश्रद्धान हुए बिना सम्यक्त्व नहीं होता।[२]''

धर्मबुद्धि से धर्म के धारक व्यवहाराभासियों में सम्यग्दर्शन के संदर्भ में हुई भूलों की चर्चा के उपरान्त अब सम्यग्ज्ञान संबंधी भूलों की बात करते हैं। उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''अब, शास्त्र में सम्यग्ज्ञान के अर्थ शास्त्राभ्यास करने से सम्यग्ज्ञान होना कहा है; इसलिए यह शास्त्राभ्यास में तत्पर रहता है।

वहाँ सीखना, सिखाना, याद करना, बाँचना, पढ़ना आदि क्रियाओं में तो उपयोग को रमाता है; परन्तु उसके प्रयोजन पर दृष्टि नहीं है।

इस उपदेश में मुझे कार्यकारी क्या है, सो अभिप्राय नहीं है; स्वयं शास्त्राभ्यास करके औरों को सम्बोधन देने का अभिप्राय रखता है और बहुत से जीव उपदेश मानें वहाँ संतुष्ट होता है; परन्तु ज्ञानाभ्यास तो अपने लिए किया जाता है और अवसर पाकर पर का भी भला होता हो तो पर का भी भला करे। तथा कोई उपदेश न सुने तो मत सुनो, स्वयं क्यों विषाद करे ? शास्त्रार्थ का भाव जानकर अपना भला करना।[३]''

उक्त कथन में पण्डितजी ने जो चित्र प्रस्तुत किया है; वह न केवल यह बताता है कि उस समय पण्डितजी की जानकारी में ऐसे लोग रहे होंगे, जिनकी वृत्ति और प्रवृत्ति इसप्रकार की होगी; अपितु आज भी ऐसे लोग बहुतायत में देखे जाते हैं। तात्पर्य यह है कि व्यवहाराभासियों की यह प्रवृत्ति सदा और सर्वत्र विद्यमान रहती ही है।

देखो, यहाँ अन्य आत्मार्थी भाई–बहिनों को तत्त्वाभ्यास कराने का तो निषेध नहीं किया; क्योंकि **इसके बिना तो देशनालब्धि के अवसर ही समाप्त हो जाते हैं,** जिनागम के लोप का भी प्रसंग उपस्थित हो सकता है; परन्तु **दूसरों को उपदेश देने का अभिप्राय रखकर जिनागम के अभ्यास करने का निषेध अवश्य किया**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २३४ २. वही, पृष्ठ २३५
३. वही, पृष्ठ २३५

है। जिनागम का स्वाध्याय तो आत्मकल्याण की भावना से ही किया जाना चाहिए। अपने हित के साथ-साथ दूसरों का भी भला हो जावे तो अच्छा ही है।

व्यवहाराभासियों की प्रवृत्ति का चित्रण करते हुए वे आगे लिखते हैं-

''तथा शास्त्राभ्यास में भी कितने ही तो व्याकरण, न्याय, काव्य आदि शास्त्रों का बहुत अभ्यास करते हैं; परन्तु वे तो लोक में पाण्डित्य प्रगट करने के कारण हैं, उनमें आत्महित का निरूपण तो है नहीं। इनका तो प्रयोजन इतना ही है कि अपनी बुद्धि बहुत हो तो थोड़ा बहुत इनका अभ्यास करके पश्चात् आत्महित के साधक शास्त्रों का अभ्यास करना।

यदि बुद्धि थोड़ी हो तो आत्महित के साधक सुगम शास्त्रों का ही अभ्यास करे। ऐसा नहीं करना कि व्याकरणादिक का ही अभ्यास करते-करते आयु पूर्ण हो जाये और तत्त्वज्ञान की प्राप्ति न बने।[१]''

उक्त कथन में न्याय-व्याकरण पढ़ने का निषेध तो नहीं किया; क्योंकि इनके अभ्यास से जिनागम के अभ्यास में सहयोग प्राप्त होता है।

लगभग हमारे सभी मूल शास्त्र प्राकृत-संस्कृत में है और तत्त्व के निर्णय में न्याय शास्त्र की उपयोगिता असंदिग्ध है; परन्तु न्याय-व्याकरण में जीवन खपा देने का निषेध बड़ी दृढ़ता से किया है।

चार अनुयोग संबंधी शास्त्रों के स्वाध्याय के संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी का मार्गदर्शन इसप्रकार है -

''तथा कितने ही जीव पुण्य-पापादिक फल के निरूपक पुराणादि शास्त्रों का; पुण्यपापक्रिया के निरूपक आचारादि शास्त्रों का, तथा गुणस्थान-मार्गणा, कर्मप्रकृति, त्रिलोकादि के निरूपक करणानुयोग के शास्त्रों का अभ्यास करते हैं; परन्तु यदि आप इनका प्रयोजन नहीं विचारते, तब तो तोते जैसा ही पढ़ना हुआ। और यदि इनका प्रयोजन विचारते हैं तो वहाँ पाप को बुरा जानना, पुण्य को भला जानना, गुणस्थानादिक का स्वरूप जान लेना तथा जितना इनका अभ्यास करेंगे, उतना हमारा भला है ह्व इत्यादि प्रयोजन का विचार किया है, सो इससे इतना तो होगा कि नरकादि नहीं होंगे, स्वर्गादिक होंगे; परन्तु मोक्षमार्ग की तो प्राप्ति होगी नहीं।

प्रथम सच्चा तत्त्वज्ञान हो; वहाँ फिर पुण्य-पाप के फल को संसार जाने, शुद्धोपयोग से मोक्ष माने, गुणस्थानादिरूप जीव का व्यवहार निरूपण जाने; इत्यादि ज्यों का त्यों श्रद्धान करता हुआ इनका अभ्यास करे तो सम्यग्ज्ञान हो।

तत्त्वज्ञान के कारण अध्यात्मरूप द्रव्यानुयोग के शास्त्र हैं, और कितने ही जीव उन शास्त्रों का भी अभ्यास करते हैं; परन्तु वहाँ जैसा लिखा है, वैसा निर्णय स्वयं करके आपको आपरूप, पर को पररूप और आस्रवादिक का आस्रवादिरूप श्रद्धान नहीं करते।

मुख से तो यथावत् निरूपण ऐसा भी करें, जिसके उपदेश से अन्य जीव सम्यग्दृष्टि हो जायें; परन्तु जैसे कोई लड़का स्त्री का स्वांग बनाकर ऐसा गाना गाये, जिसे सुनकर अन्य पुरुष-स्त्री कामरूप हो जायें; परन्तु वह तो जैसा सीखा वैसा कहता है, उसे कुछ भाव भासित नहीं होता, इसलिए स्वयं कामासक्त नहीं होता। उसीप्रकार यह जैसा लिखा है, वैसा उपदेश देता है; परन्तु स्वयं अनुभव नहीं करता। यदि स्वयं को श्रद्धान हुआ होता तो अन्य तत्त्व का अंश अन्य तत्त्व में न मिलाता; परन्तु इसका ठिकाना नहीं है, इसलिए सम्यग्ज्ञान नहीं होता।

इसप्रकार यह ग्यारह अंग तक पढ़े, तथापि सिद्धि नहीं होती।[२]''

उक्त सम्पूर्ण कथन अत्यन्त सहज, सरल एवं पूर्णत: स्पष्ट है; अत: इस पर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है।

इसप्रकार हम देखते हैं कि व्यवहाराभासी गृहीत मिथ्यादृष्टि सम्यग्ज्ञान के लिए जो भी प्रयास करता है, वे सब निरर्थक ही हैं। ●

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २३५ २. वही, पृष्ठ २३७

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के प्रयासों से -

आठवीं बोर्ड की परीक्षा तिथि परिवर्तित

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 1 अप्रैल को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रदेश द्वारा **जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा, उदयपुर** को महावीर जयन्ती के दिन परीक्षायें आयोजित न करने हेतु ज्ञापन भेजा गया, जिसे स्वीकार कर परीक्षा तिथि परिवर्तित की गई।

फैडरेशन के प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्र शास्त्री ने बताया कि दिनाँक 16 अप्रैल को महावीर जयन्ती को राष्ट्रीय अवकाश के दिन जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा उदयपुर द्वारा 8 वीं की हिन्दी एवं 9 वीं की गणित की परीक्षा आयोजित की गई थी, जिसकी हमने घोर भर्त्सना करते हुये तिथि परिवर्तित करने की मांग की। हमने ज्ञापन दिया कि यह विभाग की लापरवाही को उजागर करता है कि राष्ट्रीय अवकाश के दिन भी परीक्षायें आयोजित की गई है।

हमारे ज्ञापन पर जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक शिक्षा उदयपुर के अनुसार परीक्षाओं की तिथि में परिवर्तन किया गया और परीक्षायें दिनाँक 16 अप्रैल के स्थान पर दिनाँक 15 अप्रैल को आयोजित की गयी।

परीक्षा तिथि को परिवर्तित कराने में फैडरेशन के प्रदेश महामंत्री श्री राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. महावीरप्रसादजी जैन उदयपुर, श्री संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, श्री जयकुमारजी बारां, श्री सुनीलजी वक्तावत उदयपुर, श्री अजीतजी जैन अलवर, श्री गणतंत्रजी जैन 'ओजस्वी' बांसवाड़ा, श्री संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, श्री सर्वज्ञ भारिल्ल, श्री संजयजी सेठी जयपुर, उदयपुर संभाग प्रभारी श्री नृपेन्द्रजी जैन, कोटा संभाग प्रभारी श्री अजयजी जैन, उदयपुर जिला अध्यक्ष श्री कमलजी भोरावत, महामंत्री श्री अशोकजी गदिया, सेक्टर 3 महिला फैडरेशन अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा जैन, मुमुक्षु फैडरेशन अध्यक्ष श्री सुरेशजी भोरावत आदि कार्यकर्त्ताओं का सहयोग प्राप्त हुआ।

महाविद्यालय के छात्रों का सुयश

जयपुर (राज.) : यहाँ राजस्थान जैन सभा के तत्त्वावधान में के.सी. कटारिया चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा **महावीर के परिप्रेक्ष्य में अहिंसा** विषय पर एक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय की छात्रा कु.प्रतीति पाटील ने प्रथम एवं कु.श्रुति जैन ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। साथ ही अनिल जैन व अशोक जैन ने भी सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किये।

इन सभी छात्रों को दिनाँक 27 मार्च को भट्टारकजी की नसियां में श्री इंदरचंदजी कटारिया द्वारा प्रमाणपत्र, स्मृति चिह्न एवं नकद राशि देकर पुरस्कृत किया गया।

प्रथम वार्षिकोत्सव संपन्न

कानोड़-उदयपुर (राज.) : यहाँ राजमहल पैलेस परिसर में युनिवर्सल पब्लिक स्कूल का प्रथम वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर (अध्यक्ष-अ.भा.जैन युवा फैडरेशन, राज.प्रदेश) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री सम्पतलालजी मण्डोवरा (जिला शिक्षा अधिकारी प्रारंभिक) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री देवेन्द्रसिंहजी शक्तावत (सभापति-नगरपालिका), डॉ.महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर (उपाध्यक्ष- युवा फैडरेशन, राज.प्रदेश), श्री गणतंत्रजी शास्त्री 'ओजस्वी' (प्रदेश प्रचार मंत्री), श्री चांदमलजी किकावत (समाजसेवी) आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस विद्यालय के संचालक टोडरमल महा. के स्नातक श्री अंकितजी शास्त्री ने बताया कि राजस्थान का यह प्रथम विद्यालय है, जिसमें प्रतिदिन बच्चों को दो कालांश अहिंसा-शाकाहार-सदाचार की शिक्षा दी जाती है।

संचालन डॉ. ममता जैन एवं श्री विकेश जैन ने किया। **- ललित जैन**

कार्यकारिणी पुनर्गठित

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दि.जैन मुमुक्षु मण्डल की कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया। कार्यकारिणी निम्नानुसार है ह्र

अध्यक्ष-श्री सुभाषचंदजी चौधरी, **कार्याध्यक्ष**-श्री अशोककुमारजी जैन, **मंत्री**-श्री उमेशचंदजी जैन, **संयुक्त मंत्री**-श्री अरविन्दजी जैन बामौरा, **उपाध्यक्ष**-श्री हुकमचंदजी जैन, श्री देवेन्द्रजी बड़कुल, श्री राजकुमारजी पुट्ठामिल, श्री अरविन्दजी सोगानी, श्री राजेन्द्रजी मोदी, श्री सतीशजी लीडर इंजी. व श्री ज्ञानचंदजी जैन, **कोषाध्यक्ष**-श्री वीरेन्द्रजी जैन हुण्डी, **सह-कोषाध्यक्ष**-श्री उमरेशजी सिंघई, **साहित्य संयोजक**-श्री सुरेन्द्रजी सोगानी, **प्रवक्ता**-श्री जितेन्द्रजी सोगानी, **सांस्कृतिक मंत्री**-श्री सुरेशजी भज्जू, **प्रचार मंत्री**-श्री पदमजी जैन, **संगठन मंत्री**-श्री राजीवजी मोदी, **उपमंत्री**-श्री राजकुमारजी बदामीलाल, श्री राकेशजी दिवाकर, श्री विमलजी भारल्ल, श्रीचंदजी जैन व श्री जिनेशजी भंडारी और **आंतरिक अंकेक्षक**-श्री अजितजी बजाज चुने गये।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

1 से 5 मई	देवलाली	श्री कानजीस्वामी जयंती
6 मई	चन्देरी	वेदी शिलान्यास
10 से 12 मई	मेरठ	वेदी प्रतिष्ठा
12 से 14 मई	दिल्ली	पंचकल्याणक दि.जैन परिषद
15 मई से 1 जून	जयपुर	प्रशिक्षण शिविर
3 जून से 24 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ (U.K.-U.S.A.)

नोट : विदेश का विस्तृत कार्यक्रम विगत अंक में दिया गया है।

धार्मिक शिविर संपन्न

एलोरा (महा.) : यहाँ श्री पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम गुरुकुल में दिनाँक 21 से 27 मार्च तक धार्मिक शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात:, दोपहर व सायं तीनों समय ब्र. यशपालजी जैन जयपुर द्वारा गुणस्थान विवेचन पर कक्षाओं का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित गुलाबचंदजी बोरालकर द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित संजयजी राउत द्वारा समयसार एवं पण्डित प्रदीपजी माद्रप द्वारा विभिन्न विषयों की कक्षायें ली गयी।

शिविर में कोल्हापुर एवं एलोरा जैन समाज ने उत्साहपूर्वक धर्मलाभ लिया। कण्ठपाठ के अन्तर्गत अनेक महिलाओं ने द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ सुनाया।

समापन समारोह के अन्तर्गत शिविर में पधारे सभी विद्वानों एवं कोल्हापुर से आये साधर्मियों का आभार व्यक्त किया गया।

शिविर को सफल बनाने में पार्श्वनाथ ब्रह्मचर्याश्रम जैन गुरुकुल के पदाधिकारी श्री पन्नालालजी गंगवाल, श्री वर्धमानजी पाण्डे, श्री हर्षवर्धनजी जैन, डॉ. प्रेमचंदजी पाटनी, श्री दिनेशभाउ गंगवाल, श्री देवकुमारजी कान्हेड़ एवं श्री नेमिचंदजी अर्पल का सहयोग प्राप्त हुआ।

ज्ञातव्य है कि यह शिविर ब्र.यशपालजी की मुख्यता से उनके सहपाठियों ने लगाया था। सभी सहपाठियों ने फरवरी 2012 में जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक में सपरिवार आने की भावना भी व्यक्त की है।

इस गुरुकुल में लगभग 200 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, जिन्हें तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह, छहढाला, रत्नकरण्डश्रावकाचार, भक्तामर स्तोत्र, आदि अनेक ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127